# राजा का चौक

## क्रम


| | |
|---|---|
| राजा का चौक | 09 |
| समाधान | 26 |
| बसंती काकी | 43 |
| यह नहीं | 51 |
| सैलाब | 64 |
| क्रासिंग | 78 |
| रक्षक | 88 |
| अपने लोग | 102 |

## राजा का चौक

## यथार्थ की कलात्मक अभिव्यक्ति की ओर

हिंदी कहानी को लेकर रचनाकारों और आलोचकों पाठकों के सामने पिछले दस सालों में जो मुद्दे उभरकर आये हैं उनका एक बार नये सिरे से जायजा लेने की जरूरत भी महसूस की जा रही है। इस दौर की सबसे बड़ी उपलब्धि यह है कि कहानी ने मजदूरवर्ग, जन-सामान्य, शोषित-उत्पीड़ित लहू-लुहान मानव को अपनाया है और उसके दुख-दर्द और लड़ाकू पन को उभारा है और उसे ''पॉजीटिव हीरो'' के रूप में चित्रित किया है। जन के प्रति अपने लगाव के कारण यह साहित्य जनवादी साहित्य के रूप में जाना जा रहा।

इस दौर ने हिंदी साहित्य को जो नये प्रतिभाशाली कहानीकार दिये हैं उनमें नमिता सिंह भी हैं। उनकी रचनात्मक प्रतिभा का परिचय हमें उनके पहले कहानी संग्रह 'खुले आकाश के नीचे' से ही मिल गया था। इधर पिछले दिनों उनका दूसरा कहानी संग्रह ''राजा का चौक'' उनके विकास की आगे की दिशा का संकेत देता है। इस संग्रह में उनकी आठ कहानियाँ संकलित हैं। नमिता सिंह की कहानियों के बारे में मध ुरेश ने ठीक ही कहा था कि कहानियाँ ''सामाजिक पर्यवेक्षण की गवाही देती हैं....'' इस संकलन की कहानियां भी सामाजिक पर्यवेक्षण की कहानियां होने की गवाही देती हैं। आज हिंदी कहानी यदि समाज की चश्मदीद गवाह नहीं बनती, तो उसके कहानीपन के खोट को पाठक बड़ी जल्दी ताड़ जाता है। इसलिए आज जरूरी हो गया है कि पिछले दस पंद्रह साल के कथा साहित्य पर एक नये सिरे से गौर किया जाय और कहानी की आलोचना पर भी पुनर्विचार किया जाय। आज कहानी को जनवादी या गैर जनवादी जैसी विभाजन पद्धति से आंकना निश्चय ही एक गैरजरूरी भ्रम को फैलाना होगा। कहानी की समीक्षा के लिए अन्य रूपगत बारीकियों को विश्लेषित करने के साथ-साथ यह देखना निहायत जरूरी है कि कहानी अपनी आसपास की दुनिया, उसके बदलते यथार्थ को विश्वसनीय तरीके से प्रस्तुत कर रही है अथवा नहीं। किसी फार्मूले की तरह गढ़ा हुआ यथार्थ, जिसकी भरमार इधर काफी दिनों से कहानी में हुई है हमारे किसी काम का नहीं। कुछ कहानीकारों में अयथार्थवादी रुझान रूढ़ तक हो गया है और उनसे इतनी निराशा होने लगी है कि लगता है कि उनकी कलम से शायद ही कोई विश्वसनीय लग सकने वाली कहानी का सृजन हो।

'क्रासिंग' कहानी को पहली बार पढ़ने पर शायद ही किसी को इसके अर्थ-गाम्भीर्य का पता लग सके, मगर उसे गंभीरता से पढ़ने पर ही उसकी बुनावट की तहों में जाया जा सकता है। जिस तरह अमरकांत की 'ज़िंदगी और जोंक' में रजुआ की ज़िंदगी कहानी के अर्थों के कई स्तर समेटे हुई थी-आदमी की जिजीविषा की मूल-प्रवृत्ति का युगीन संदर्भ, वर्तमान समाज का आलोचनात्मक यथार्थ और विसंगतिपूर्ण अस्तित्व की करुणाप्लावित सचाई उसी तरह नमिता सिंह की 'क्रासिंग' की तीन केंद्रीय लघु घटनाएँ यानी सरिता नामक प्रतिभाशाली लड़की की दुर्घटना, भूरे खां नामक मजदूर की दुर्घटना और डिब्बानुमा गाड़ी में बैठी कोढ़ी का उस क्रासिंग को पार करना इस कहानी की संरचना के हिस्से मात्र नहीं है, वे कुछ व्यापक अर्थों के संदर्भ लिये हुए हैं। शोषण पर आधारित समाज व्यवस्था में नारी, मजदूर और अपाहिज की स्थिति एक जैसी होती है। सरिता और भूरे खां तथा कोढ़ी की बदहाली के ये चित्र इसी सामाजिक यथार्थ को व्यक्त करते हैं। इनकी मुक्ति भी एक व्यापक एकता और इन सबके संयुक्त जनवादी आंदोलन के हिस्से के रूप में होगी। ''क्रासिंग'' इस तरह समाज के उस अंतर्विरोध को उजागर करती है जिसके कारण शोषित दमित और उत्पाड़ित हिस्से हर रोज अपनी ज़िंदगी असमय ही खो देते हैं। रेल का माध्यम प्रगति यानि वैज्ञानिक प्रगति का फल भी लाभ-लोभ पर आधारित समाज व्यवस्था के कारण गरीबों के लिए जानलेवा बन जाता है। बात सिर्फ क्रासिंग पर पुल बनवाने की है मगर पुल तो तभी बने जब इस व्यवस्था की चिंता आम लोगों की सुरक्षा की हो। यह सुरक्षा मिथ्या चेतना और सांप्रदायिक जहर द्वारा और अधिक बढ़ जाती है। 'क्रासिंग' कहानी में इस यथार्थ को भी चित्रित किया गया है। कहानी के अंत में कोढ़ी की डिब्बानुमा गाड़ी का चित्र रेलगाड़ी के एंटीथीसिस के रूप में आया है, यह चित्र इस समाजव्यवस्था पर एक काले धब्बे की तरह अंकित कर दिया गया है जो गरीबी हटाने का दावा करते कभी नहीं अघाती। कहानी लेखिका ने अंत में कलात्मक आइरनी का प्रयोग किया है जिसे इस रूप में देखा जा सकता है कि कोढ़ी की गाड़ी खींचनेवाला बालक और कोढ़ी अपनी बदहाली से उबरने के लिए 'सीताराम-सीताराम' का कीर्तन कर रहे हैं। इस दो धार वाले

आलोचनात्मक यथार्थ ने इस कहानी को एक समर्थ रचना बना दिया है।

इसी कड़ी में नमिता सिंह की एक और कहानी हम संग्रह में जो विश्वसनीय यथार्थ को पेश करती है, वह है 'बसंती काकी'। इसके माध्यम से लेखिका ने गांव के जीवन का यथार्थ, शहर के जीवन का यथार्थ और देश के जीवन का राजनीतिक यथार्थ पेश करने की कोशिश की है। हालांकि कि कहानी के ये तमाम पहलू सूचित किये गये हैं, कहानी के भीतर किसी नाटकीय, एक्शन से नहीं निकले हैं, फिर भी वे सूचनाएं आरोपित नहीं लगतीं।

माननीय करुणा और स्नेह का एक ओर बेहतर रूप नमिता सिंह की ''यह नहीं'' कहानी में मिलता है। शकूर नामक रिक्शा चालक उस छोटी सी स्कूली बच्ची बबली को मानवीय स्नेह देता है जो उसे अपना बालसुलभ स्नेह देती है और जो उसके रिक्शे में घूमने भी जाती है। शकूर अमानवीय हिंसा का सांप्रदायिक गुंडों के चाकू का शिकार होता है और यह चाकू उसी के संप्रदाय के एक गुंडे अब्दुल्ला का होता है जो उसका खून करता है। हालांकि इस कहानी में यथार्थ विश्वसनीय बनते बनते रह गया है, फिरभी लेखिका ने जिस थीम को चुना और जिस तरीके से निर्वाह करने की कोशिश की है, वह प्रशंसनीय है। शकूर टैगोर के काबुलीवाला की तरह का पात्र बन सकता था, लेकिन कहानी कलात्मक मंझाव की थोड़ी सी कमजोरी के कारण वांछित करुणा जगाने में बहुत अधिक समर्थ नहीं हो पायी है। मगर पहले की कहानियों के मुकाबले, मसलन शानू की हत्या दिखाने वाली ''मुक्ति'' कहानी के मुकाबले, इस कहानी का यथार्थ ज्यादा अर्थवान और विश्वसनीय बन पड़ा है, भले ही अभी वह आदर्श स्थिति को हासिल न कर पाया हो।

नमिता सिंह की कुछ कहानियां निश्चय ही मौजूदा दौर की कमियों को दूर करती हुई विश्वसनीय यथार्थ का सृजन करने का प्रयास करती है और हिंदी कहानी के अगले विकास की सूचक है। कुछ कहानियों में अभी भी पिछले दस सालों के बीच आये कच्चेपन के अवशेष हैं जिन्हें दूर करने का संघर्ष भी लेखिका के रचनाकर्म में दिखाई देता है। मसलन 'समाधान' कहानी में या फिर 'अपने लोग' कहानी में मजदूरों का या हरिजनों का देवीकरण करने की कोशिश के विपरीत उनकी कमजोरियों और चेतना के स्तर को यथार्थपरक ढंग से चिंचित करने के लिये रचना संघर्ष साफ दिखाई देता है। ''समाधान'' कहानी में मंदिर बनवा देने के आश्वासन से हड़ताल टूट जाती है और 'अपने लोग' कहानी में अनुसूचित जातियों के बीच आपस में एक दूसरे को अछूत मानने की कमजोरी सामने लायी जाती है और उनकी संघर्षशीलता धरी रह जाती है। पात्रों को उदात्त बनाने की चली आ रही रस्म को लेखिका तोड़ने की कोशिश कर रही है, यह एक अच्छी बात है, मगर एक अतिवाद से दूसरे अतिवाद की ओर चले जाने से भी यथार्थ एकांगी ही रहेगा। असली मुद्दा अभी भी यथार्थ को विश्वसनीय बनाने का ही है। इन कहानियों के मुकाबले ''राजा का चौक'' कहानी का यथार्थ विश्वसनीय है और अर्थवान भी।

संक्षेप में, नमिता सिंह का यह कहानी संग्रह मौजूदा दौर की हिंदी कहानी की शक्तियों और सीमाओं का प्रतिनिधित्व करता है। नमिता सिंह को अन्य उनके समकालीन कहानीकारों के मुकाबले हिंदी कहानी की मौजूदा कमियों का तीखा अहसास है जिन्हें दूर करने की कोशिश में ही यह 'क्रासिंग' जैसी कहानी की मंजिल तक पहुंची है। यह संकलन आश्वस्त करता है कि वे हिंदी साहित्य को और अधिक यथार्थपरक कहानियां दे सकेंगी और आज के उत्पीड़ित, दमित, शोषित, लहूलुहान-मानव के करुण दृश्य सिरजेंगी।

**चंचल चौहान**

**(कंक-जून, 1983, रतलाम)**